परमेश्वर और उद्धारकर्ता, जीवन के लेखक, यीशु मसीह के नाम की स्तुति हो! स्वागत है जब हम मिलकर परमेश्वर के वचन में डूबते हैं।

ऐसा समय आएगा जब परमेश्वर का दीपक बुझ जाएगा। उस क्षण से पहले हमें परमेश्वर की पुकार का उत्तर देना चाहिए।

“उस समय एली, जिनकी आँखें इतनी कमजोर हो रही थीं कि वे
मुश्किल से देख पाते थे, अपनी जगह लेटे हुए थे। परमेश्वर का दीपक अभी बुझा नहीं था, और शमूएल परमेश्वर के घर में लेटा
हुआ था, जहाँ परमेश्वर की झाँकी रखी थी। तब प्रभु ने शमूएल
को बुलाया, और उसने कहा, ‘हाँ, यहाँ मैं हूँ!’”
(1 शमूएल 3:2–4)

“दीपक का बुझना” और इसके समय के महत्व को समझने के लिए हमें मूसा को दिए गए आश्रय के निर्माण का विवरण याद करना होगा (निर्गमन 25–27)। आश्रय में तीन भाग थे: बाहरी प्रांगण, पवित्र स्थान, और परम पवित्र स्थान।

पवित्र स्थान में तीन पवित्र वस्तुएँ थीं:

धूपदान का वेदी,
रोटी की मेज,
सप्त शाखाओं वाला सोने का दीपक (मेनोराह)।

दीपक का उद्देश्य था रात के समय लगातार प्रकाश देना। परमेश्वर ने आदेश दिया कि दीपक रात से सुबह तक लगातार जलता रहे (निर्गमन 27:20–21; लैव्यवस्था 24:1–3)।

यह लगातार जलता दीपक परमेश्वर की उपस्थिति, मार्गदर्शन, और अपने लोगों के प्रति वचनबद्धता का प्रतीक था। सुबह होते ही सूर्य का प्रकाश दीपक की जगह ले लेता और तब इसे बुझा दिया जाता।

1 शमूएल में “परमेश्वर का दीपक अभी बुझा नहीं था” का अर्थ है
कि अभी रात थी — अंधकार ने सुबह का स्वागत नहीं किया था।
इसी आध्यात्मिक और भौतिक अंधकार में परमेश्वर ने शमूएल को बुलाया।

यह क्षण गहरी प्रतीकात्मकता रखता है:

अंधकार लोगों या व्यक्ति की आत्मा की आध्यात्मिक स्थिति का प्रतीक है — अनिश्चितता, प्रतीक्षा, या संकट के समय।
दीपक परमेश्वर की कृपा और प्रकाश का प्रतीक है जो उस अंधकार में चमकता है।

परमेश्वर की पुकार हमें उसकी आवाज़ का उत्तर देने का निमंत्रण है, जो शुरू में सामान्य या मानव आवाज़ जैसी प्रतीत हो सकती है।

शमूएल की प्रारंभिक उलझन — यह सोचकर कि एली बुला रहे हैं — याद दिलाती है कि परमेश्वर की पुकार अक्सर सूक्ष्म या अप्रत्याशित रूप में आती है। जो मानव आवाज़ लगती है, वह परमेश्वर की आवाज़ भी हो सकती है।

परमेश्वर की पुकार अति आवश्यक है। अगर शमूएल ने उस समय जब दीपक जल रहा था, पुकार को अनदेखा किया होता, तो वह बहुत बाद में ही परमेश्वर से सुन पाता।

यह हमें सिखाता है कि परमेश्वर की कृपा और उत्तर देने का अवसर सीमित है।

“परमेश्वर का दीपक” कृपा है, और एक समय आएगा जब इसे वापस ले लिया जाएगा — जब परमेश्वर का धैर्य समाप्त हो जाएगा।

हमें अपने हृदय की परीक्षा करनी चाहिए:

क्या आपने यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है?
क्या आपने बपतिस्मा लिया है और उनके साथ व्यक्तिगत संबंध में प्रवेश किया है? क्या आप परमेश्वर की पुकार के अनुसार जीवन जी रहे हैं?

यदि नहीं, तो अब उत्तर देने का समय है — इससे पहले कि दीपक बुझ जाए।

“अपने सृजनकर्ता को अपनी युवावस्था में स्मरण करो, जब तक कि बुरे दिन न आएँ और वर्ष पास न आएँ जिनमें तुम कहोगे, ‘मैंने उनमें कोई सुख नहीं पाया।’”
(सभोपदेशक 12:1)

यह वचन आपको प्रोत्साहित करे कि आप परमेश्वर की पुकार का उत्तर आज दें — जब तक उसकी कृपा का दीपक जल रहा है।

मरानथा — आओ, प्रभु यीशु!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp